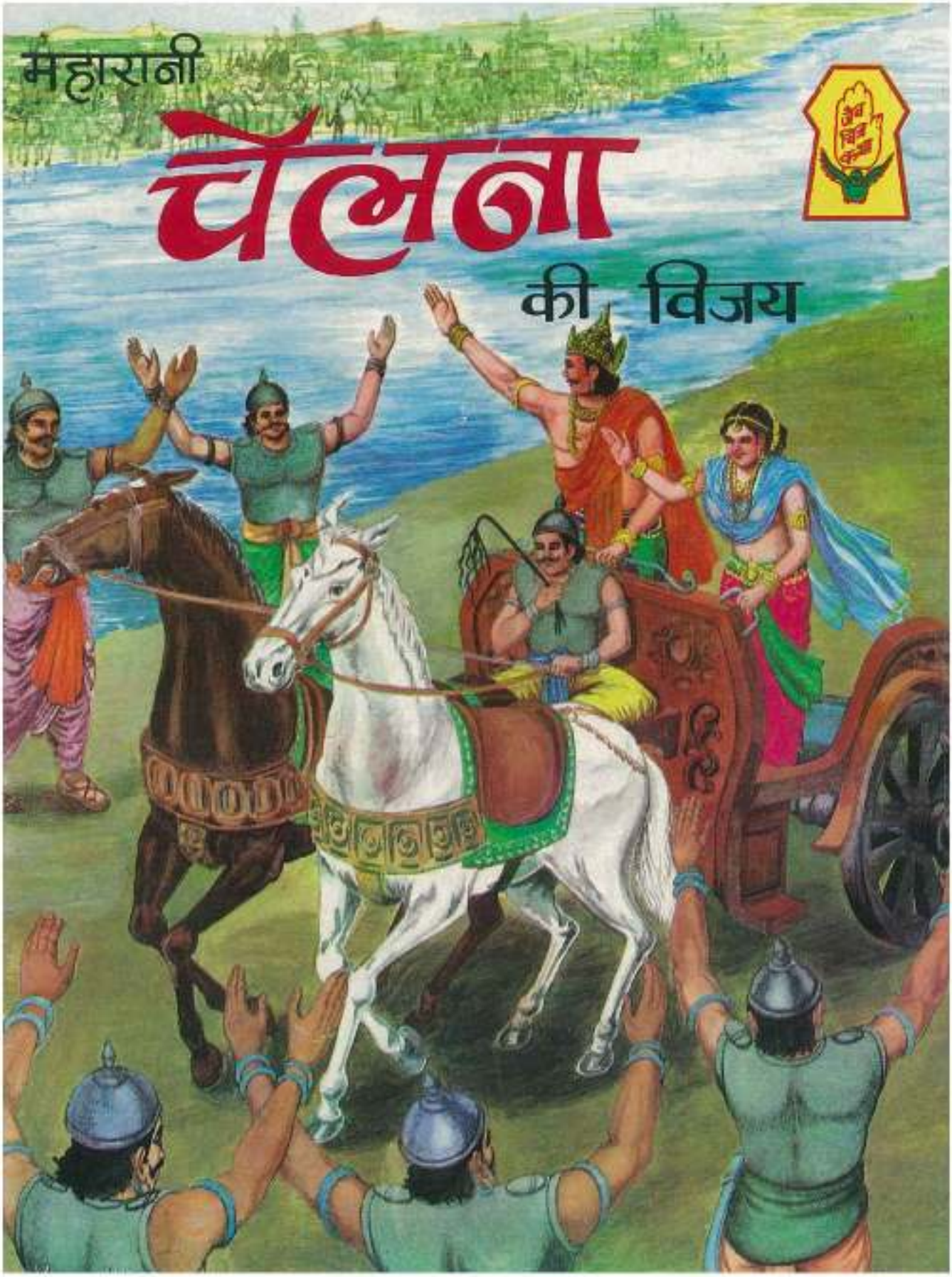

महारानी
चेलना
की विजय

सम्पादकीय

भगवान महावीर के शासन काल के समय वज्जी गणतंत्र के गणपति राजा चेटक की सबसे छोटी पुत्री राजकुमारी चेलना का एक चित्र देखकर मगध सम्राट बिम्बसार उसके रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हो उठे उन्होंने उससे विवाह करने की इच्छा की उनके पुत्र युवराज अभय कुमार ने साहस और युक्ति पूर्वक राजकुमारी चेलना को मगध लाकर अपने पिता सम्राट बिम्बसार की पटरानी बना दिया।

उधर राजा चेटक क्रोध से उबल पड़े। युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। अहिंसा धर्म को मानने वाली चेलना यह कैसे सहन करती की उसके कारण युद्ध में हजारों लोगों का रक्त बहे। वह स्वयं युद्ध भूमि में पहुँच गई। क्या वैशाली की सेना अपनी ही बेटी पर शस्त्र उठाती? और युद्ध टल गया।

यही अहिंसा धर्म और महारानी चेलना की सच्ची विजय थी।

ब्र० धर्मचंद शास्त्री
प्रतिष्ठाचार्य ज्योतिषाचार्य

जैन चित्र कथा

- ☆ **महारानी चेलना की विजय (भाग I)**
- ☆ **प्रकाशक** : आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला
- ☆ **सम्पादक** : धर्मचन्द शास्त्री
- ☆ **लेखक** : ब्र० रजनी जैन (संघस्थ आदिमति माता जी)
- ☆ **कला** : डा० मधु जैन, बम्बई
- ☆ **I.S.B.N.** : 81-85834-43-1
- ☆ **मूल्य** : 10 रुपये
- ☆ **प्रकाशन वर्ष** : 1996

कार्यालय

(१) श्री दिगम्बल जैन मन्दिर गुलाब वाटिका लोनी रोड, जि० गाजियाबाद (उ०प्र०)

(२) गोधा सदन अलसीसर हाउस, एस०सी० रोड, जयपुर

स्वाधिकारी, मुद्रक/प्रकाशक तथा सम्पादक धर्मचंद शास्त्री

महारानी चेलना की विजय



कला : मधु जैन



वज्जी गणतंत्र के गणपति, लिच्छवी राजा चेटक की सबसे छोटी पुत्री राजकुमारी चेलना का एक चित्र देखकर मगध सम्राट बिंबसार उसके रुप सौन्दर्य पर मुग्ध हो उठे थे. उन्होंने उससे विवाह करने की इच्छा की उनके पुत्र युवराज अभय-कुमार ने साहस और युक्ति पूर्वक राजकुमारी चेलना को मगध लाकर अपने पिता सम्राट बिंबसार की पटरानी बना दिया.

उधर राजा चेटक क्रोध से उबल पड़े. युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई. अहिंसा धर्म को मानने वाली चेलना यह कैसे सहन करती कि उसके कारण युद्ध में हजारों लोगों का रक्त बहे. वह स्वयं युद्ध भूमि में पहुँच गई क्या वैशाली की सेना अपनी ही बेटी पर शस्त्र उठाती?

और युद्ध टल गया.

यही अहिंसा धर्म और महारानी चेलना की सच्ची विजय थी.


राजा बिम्बसार का राज दरबार
महामात्य वर्षकार! हमारे युवराज अभय कुमार अभी केवल बीस वर्ष के होंगे, पर उनकी बुद्धि पच्चीस-तीस बरस के युवकों के बराबर है!
जी हाँ महाराज! युवराज ने अपनी प्रतिभा और लगन से राज काज में इस तरह सहयोग दिया है कि आपका और मेरा कार्यभार काफी कम हो गया है।

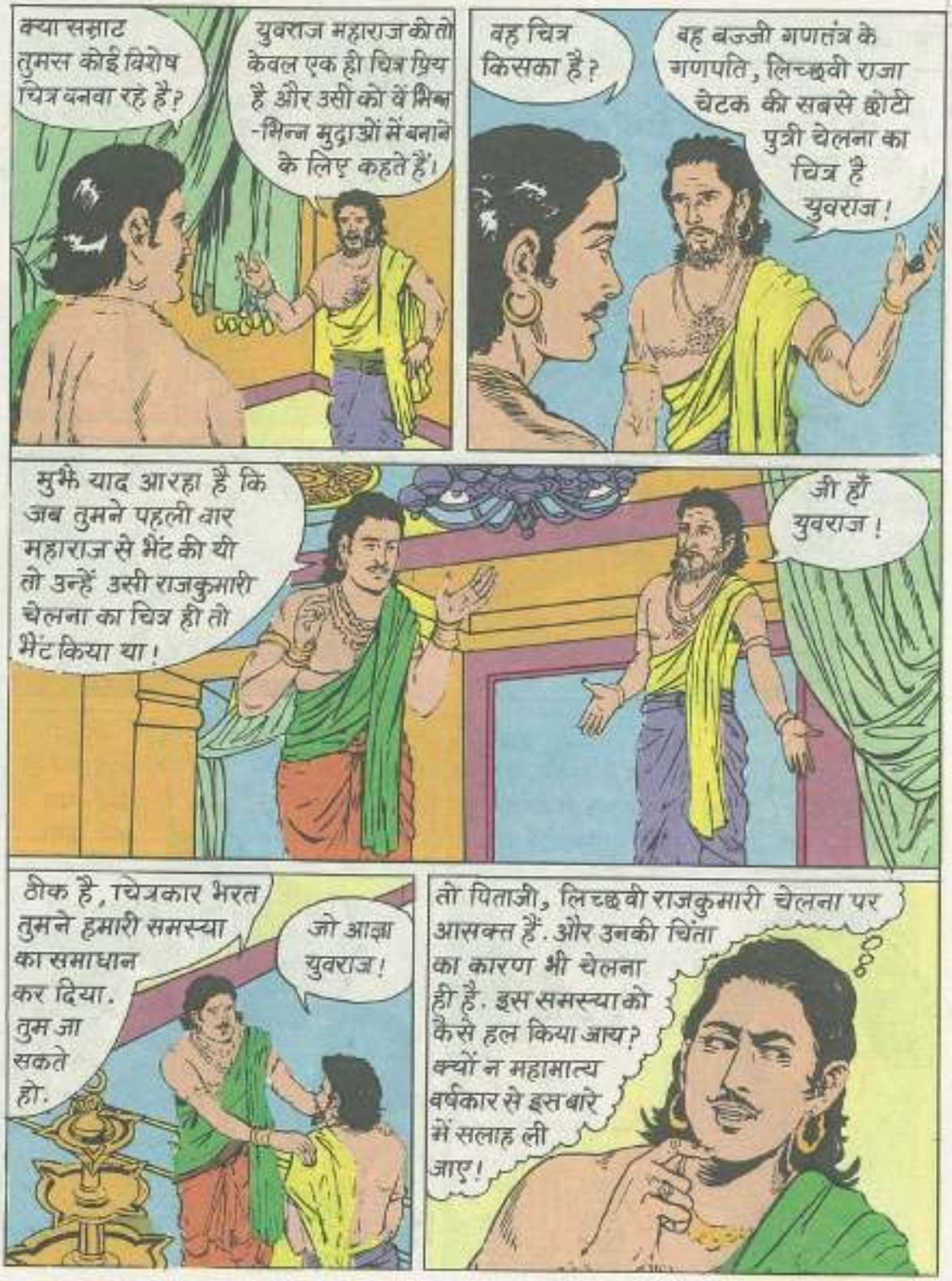

युवराज अभय कुमार अपने पिता महाराज बिम्बसार के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते थे।


एक दिन .....
पिताजी ! क्या बात है? मैं कुछ दिनों से देख रहा हूँ कि आप कुछ सुस्त और उदास रहते हैं? क्या कारण है ?
मैं तो बिलकुल ठीक हूँ! तुम चिंता न करो कुमार!


किंतु अभयकुमार चिंता नहीं छोड़ सके.
पिताजी अवश्य ही अपना कष्ट छिपा रहे है. क्यों न वैद्यों को बुला कर उनके स्वास्थ्य की परीक्षा कराई जाए!


अगले दिन वैद्यों ने परीक्षण किया.
कहिए वैद्यराज! आप लोगों ने क्या देखा और इलाज की क्या व्यवस्था होगी?
युवराज! हमारे महाराज शारीरिक रूप से एकदम स्वस्थ हैं.
तो फिर... ?
महाराज किसी चिंता में डूबे हुए हैं. उनकी चिंता ही उनकी उदासी और सुस्ती का कारण है.
पिताजी की चिंता का कारण क्या हो सकता है? कोई घटना, कोई व्यक्ति या कुछ और.... इसका पता तो लगाना ही चाहिए.
अचानक अभयकुमार को याद आया कि महाराज से चित्रकार भरतकुमार मिला था. उसके बाद से ही महाराज उदास रहने लगे.
प्रहरी! चित्रकार भरतकुमार को तत्काल बुलाकर लाओ.

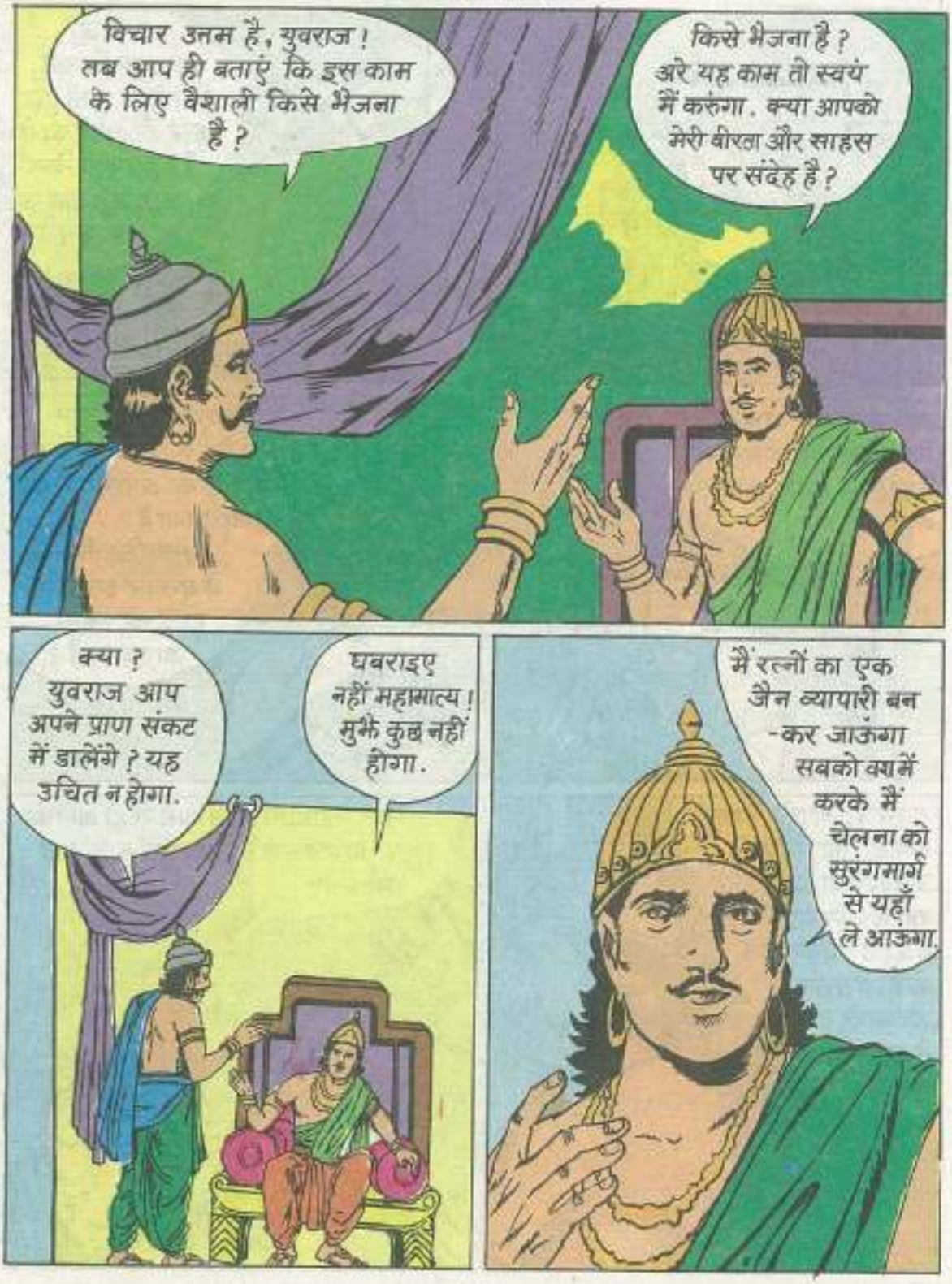

चित्रकार भरतकुमार तुरंत आगया.
कहो चित्रकार! हमारे राज्य में तुम्हें किसी तरह का कष्ट तो नहीं? तुम्हारे काम में कोई बाधा तो नहीं डालता?
युवराज! आपके होते हुए मुझे क्या कष्ट हो सकता है. फिर भला किसमें साहस है जो मेरे काम में बाधा डाले.
तुम्हें अपना निवास स्थान अच्छा लगा?
युवराज! वह घर तो लगता है आपने मेरी रुचि के अनुकूल ही बनवाया है. मेरी चित्रशाला में बड़े-बड़े लोग आते हैं और चित्रों का आनन्द लेते हैं.
क्या सम्राट बिम्बसार भी कभी आपकी चित्रशाला में आए?
जी हाँ महाराज भी तीन-चार बार कृपा कर चुके हैं.


क्या सम्राट तुमसे कोई विशेष चित्र बनवा रहे हैं?
युवराज महाराज को तो केवल एक ही चित्र प्रिय है और उसी को वे भिन्न -भिन्न मुद्राओं में बनाने के लिए कहते हैं।
वह चित्र किसका है?
वह बज्जी गणतंत्र के गणपति, लिच्छवी राजा चेटक की सबसे छोटी पुत्री चेलना का चित्र है युवराज!
मुझे याद आरहा है कि जब तुमने पहली बार महाराज से भेंट की थी तो उन्हें उसी राजकुमारी चेलना का चित्र ही तो भेंट किया था!
जी हाँ युवराज!
ठीक है, चित्रकार भरत तुमने हमारी समस्या का समाधान कर दिया. तुम जा सकते हो.
जो आज्ञा युवराज!
तो पिताजी, लिच्छवी राजकुमारी चेलना पर आसक्त हैं. और उनकी चिंता का कारण भी चेलना ही है. इस समस्या को कैसे हल किया जाय? क्यों न महामात्य वर्षकार से इस बारे में सलाह ली जाए!


युवराज अभयकुमार रात को उसी समय महामात्य वर्षकार के निवास स्थान पर पहुँचे.
स्वागत युवराज ! इतनी रात गये आप यहाँ ?
हाँ महामात्य ! कुछ आवश्यक परामर्श लेना है !
आइए, आसन ग्रहण करें !
महामात्य ! मैं कई सप्ताहों से पिताश्री को चिंतित देख रहा हूँ. सम्भव है आपने भी यह देखा हो ?
जानता हूँ युवराज ! और उनकी चिंता का कारण भी जानता हूँ
क्या जानते हैं महामात्य ! ज़रा खुलकर बताइए !
वह राजकुमारी चेलना के लिए व्याकुल है. जबसे उन्होंने उसका चित्र देखा है, तभी से उनका ये हाल है.
आप शायद ठीक कहते हैं.
किंतु महामात्य ! महाराज का कष्ट जानते हुए भी आपने उसे दूर करने का कोई उपाय क्यों नहीं किया !
उपाय इतना सरल नहीं है !


वह क्या है?
यही कि राजकुमारी चेलना को उनके लिए प्राप्त किया जाय! और यह असम्भव है!
असंभव क्यों, महामात्य?
क्योंकि लिच्छवी राजा चेटक जैन धर्म का पालन करता है. हमारे आचरण भिन्न होने के कारण हमसे घृणा करता है.
और युवराज, आजकल तो उनका उत्साह इतना बढ़ा हुआ है कि वे मगध पर आक्रमण करके हमारे यहाँ भी गणराज्य की स्थापना करना चाहते हैं. फिर भला विवाह -सम्बंध कैसे सम्भव है?
महामात्य! आप ठीक कहते हैं. समस्या जटिल है. किंतु मैं सोचता हूँ कि यदि थोड़ी सावधानी से काम किया जाय तो सफलता मिल सकती है.


युवराज! इस समय लिच्छवी नरेश चेटक हमसे युद्ध करने की तैयारी कर रहे हैं. हम भला किस तरह इस काम को कर पायेंगे?
महामात्य! मैं सोच रहा हूँ कि राजकुमारी चेलना को वैशाली से मगध, अपहरण करके ले आएं!
क्या कह रहें हैं युवराज? क्या सर्प के बिल में घुसकर सर्पिणी का अपहरण किया जा सकता है? क्या सिंह की मांद में घुसकर उसके बच्चे को पकड़ा जा सकता है?
युवराज! आपको वैशाली नगर के रक्षा प्रबंध की जानकारी शायद नहीं है. वहाँ के नगर रक्षकों की नजर से बचकर न तो कोई आसकता है और नाही नगर से बाहर जा सकता है.
किंतु महामात्य! उस मार्ग से ही आने की क्या आवश्यकता है? हम क्यों न भूमिगत मार्ग बनाएं


विचार उत्तम है, युवराज! तब आप ही बताएं कि इस काम के लिए वैशाली किसे भेजना है?
किसे भेजना है? अरे यह काम तो स्वयं मैं करूंगा. क्या आपको मेरी वीरता और साहस पर संदेह है?
क्या? युवराज आप अपने प्राण संकट में डालेंगे? यह उचित न होगा.
घबराइए नहीं महामात्य! मुझे कुछ नहीं होगा.
मैं रत्नों का एक जैन व्यापारी बन-कर जाऊंगा सबको वश में करके मैं चेलना को सुरंगमार्ग से यहाँ ले आऊंगा.


महामात्य ! बस आप सुरंग मार्ग का निर्माण शीघ्र आरंभ करा दें. वह सुरंग गंगा के इस पार से होती हुई वैशाली के उस मकान तक पहुंचे जहां मैं निवास करुंगा.
किंतु युवराज ! आपको इस योजना में अत्यंत सावधान रहना होगा. तनिक सी असावधानी से आपके प्राण भी संकट में पड़ सकते हैं.
आप चिंता न करें, महामात्य !
किंतु आपको एक सहायता और करनी होगी, महामात्य!
आज्ञा करें युवराज !
पिताजी से अनुमति और आशीर्वाद भी आपको ही प्राप्त करके देना होगा. उनकी अनुमति के बिना मैं नहीं जा सकूंगा.
उसकी चिंता न करें युवराज ! आप जानते हैं कि सम्राट आपको कितना प्यार करते हैं और आपके प्राण संकट में पड़ें यह वे कभी नहीं चाहेंगे.
तो फिर ?

फिर भी मैं उनको राजनीतिक दांवपेंच समझाकर मनाने का प्रयत्न करूंगा. और हां, मैं आज ही कुछ गुप्तचर वैशाली के लिए रवाना कर रहा हूं.

यह किसलिए?

वे गुप्तचर वैशाली के समाचार आपको देंगे और यदि आप कोई समाचार यहाँ भेजना चाहेंगे तो उन्हें वे ला सकेंगे.

ठीक है!

अगले दिन युवराज अभयकुमार ने रत्नों के व्यापारी के वेश में वैशाली के लिए प्रस्थान किया.

वैशाली नगर में पहुंचकर उन्होंने राजा चेटक से मिलने का प्रयत्न आरंभ किया. महामंत्री से मिले.

मैं जंबूद्वीप से आया हूं. मेरा नाम रत्नप्रकाश है. मेरे साथ सेठ माणिकचंद और हीरालाल भी हैं. हम रत्नों के व्यापारी हैं. महामंत्री जी! कृपया महाराज चेटक से मिलने का समय दिलाइए.


अगले दिन राजा चेटक के पास तीनों जौहरी पहुंचे
वाह! कितने सुंदर रत्न हैं!
महाराज! ये रत्न आप जैसे पारखी के सामने कुछ नहीं हैं.


राजा चेटक, जौहरी रत्न प्रकाश की बातों से बहुत प्रसन्न हुए.
महामंत्री जी! हमने जितने रत्न चुने हैं उनका मूल्य जौहरी को दे दीजिए और रत्न ले कर कोषागार में रखवा दीजिए.


रात को अपने उस निवास पर जहाँ ये लोग ठहरे थे.
वाह युवराज! आज तो आपका अभिनय सर्वश्रेष्ठ था. कोई नहीं कह सकता था कि आप जौहरी नहीं युवराज हैं.


मैं युवराज कहाँ हूँ माणिकचंद. मैं तो रत्न प्रकाश जौहरी हूँ. इतनी जल्दी पाठ भूल गए. और हाँ आहिस्ता बोलो दीवारों के भी कान होते हैं.

भूल हो गई रत्न प्रकाश जी! क्षमा करें.

अब हमें महाराज चेटक से आज्ञा लेनी है कि हम यहाँ रह सकें और हीरों का व्यापार कर सकें.

राजा चेटक इनसे प्रसन्न तो थे ही, उन्होंने इन्हें अनुमति दे दी.

अब मुझे शीघ्र ही अपने निवास के पास ही चैत्यालय का निर्माण करवाना चाहिए, जिसमें जिन भगवान की स्थापना करके उनकी पूजा करूँ.

और चार-पाँच दिन के अंदर ही रत्न प्रकाश ने अपने निवास स्थान के अंदर एक मनोहर चैत्यालय बनवा लिया.

उस चैत्यालय में युवराज अत्यंत धूमधाम से सुबह-शाम जिन भगवान की पूजा करने लगे.

कभी-कभी वह उन सेठों के साथ मिलकर जिनेन्द्र भगवान का पूजन करता



कभी-कभी संगीत वाद्यों के साथ पूजन होता.



जिस समय रत्नप्रकाश भजन-पूजन करता, उसके शब्द रनिवास में भी पहुँचते, महिलाएं भी सुनतीं और जिन-भक्ति की प्रशंसा करतीं.



एक दिन... दोपहर का समय था. राजमहल के सभी दास-दासियाँ काम समाप्त कर विश्राम कर रहे थे.



किंतु चेलना और उसकी बड़ी बहन ज्येष्ठा अपने एक कमरे में बातें कर रहीं थी.









हाँ! किंतु हमें अपने वस्त्र बदलने होंगे, जिससे लोग हमें पहचान न पाएं.

इस प्रकार राजमहल से निकलकर वे युवराज अभयकुमार के चैत्यालय की ओर चल दीं.

उधर रत्नप्रकाश जौहरी के वेश में जिन भगवान की पूजा कर रहे युवराज अभयकुमार को सूचना मिल गयी कि दो राजकुमारियाँ आ रही हैं.

दोनों राजकुमारियाँ चैत्यालय के निकट आयीं.

कितना सुंदर चैत्यालय है. सुंदर मनोहारी. सोने के सिंहासन पर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है. उनके सिर पर शेषनाग के सातों फन सुशोभित हैं.

दोनों राजकुमारियाँ हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हैं.

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए
सव्व साहूणं.


जब दोनो राजकुमारियाँ प्रार्थना करके चलने लगीं तो उनकी दृष्टि अध्ययन कर रहे अभयकुमार पर पड़ी.
कहिए! आपको चैत्यालय कैसा लगा?
भला इतने सुंदर चैत्यालय को देखकर कौन प्रशंसा नहीं करेगा!
आपने बहुत सुंदर चैत्यालय बनवाया है!
क्या आपको सच में यह चैत्यालय अच्छा लगा?
हाँ! वास्तव में बहुत सुंदर है.
इसकी वेदी, मूर्ति आदि सभी चीजें मैं राजगृह से लाया हूँ.
तो क्या आप राजगृह से आए हैं?


हाँ! इस प्रतिष्ठित प्रतिमा को मैं बराबर अपने साथ रखता हूँ!
तब तो प्रतिष्ठित प्रतिमा साथ रखने में आपको काफी कठिनाई होती होगी?
हाँ, प्रतिष्ठित प्रतिमा की अनेक मर्यादाएँ होती हैं, जिनका मार्ग में भी पालन करना पड़ता है!

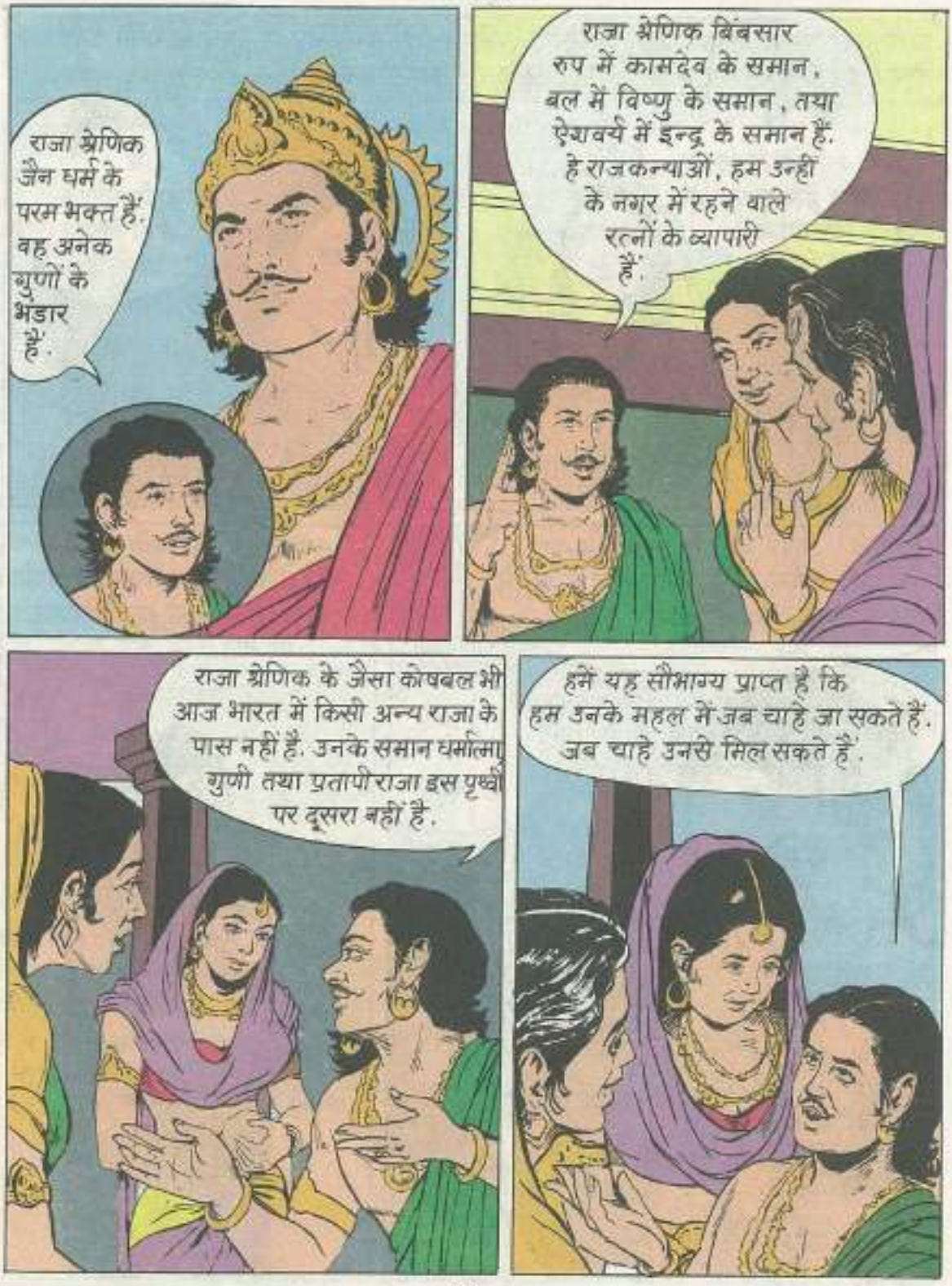

राजकुमारी जी, यह जीवन मर्यादाओं के पालन के लिए ही तो है!
जो भगवान जिनेन्द्र की स्तुति एवं पूजा भक्ति-भाव से करते हैं, वे धन्य हैं. आपका राजगृह कहाँ है? वहाँ का राजा कौन है? वह किस धर्म का पालन करता है?


आप यदि जानना चाहती हैं कि मैं जहाँ से आया हूँ वह स्थान क्या है, कैसा है तो सुनें! मैं जम्बू द्वीप से आया हूँ. यह जम्बू द्वीप अत्यंत सुंदर स्थान है!


वहाँ सुंदर सरोवर हैं जिनमें कमल खिले हैं. सुंदर हरे-भरे ग्राम हैं. अनेक मुनि वहाँ तपस्या करते हैं.


नगर में धनधान्य से पूर्ण नागरिक रहते हैं. सब ओर संपन्नता के दर्शन होते हैं.


उस मगध देश तथा राजगृह के स्वामी महाराज श्रेणिक बिंबसार हैं. वह प्रजा का नीतिपूर्वक पालन करते हैं.


राजा श्रेणिक जैन धर्म के परम भक्त हैं. वह अनेक गुणों के भंडार हैं.
राजा श्रेणिक बिंबसार रूप में कामदेव के समान, बल में विष्णु के समान, तथा ऐश्वर्य में इन्द्र के समान हैं. हे राजकन्याओं, हम उन्हीं के नगर में रहने वाले रत्नों के व्यापारी हैं.
राजा श्रेणिक के जैसा कोषबल भी आज भारत में किसी अन्य राजा के पास नहीं है. उनके समान धर्मात्मा, गुणी तथा प्रतापी राजा इस पृथ्वी पर दूसरा नहीं है.
हमें यह सौभाग्य प्राप्त है कि हम उनके महल में जब चाहे जा सकते हैं. जब चाहे उनसे मिल सकते हैं.

दोनों राजकन्याएँ राजा श्रेणिक का यश वर्णन सुनते-सुनते उन पर मुग्ध हो गयीं. उन्हें इच्छा हुई कि वे राजा श्रेणिक को ही वर-रूप में प्राप्त करें.








और यदि उनसे मगध नरेश के बारे में हम कहें भी, तो उनसे हमारे पिता के सम्बंध कैसे हैं, यह हम नहीं जानतीं.
तब श्रेष्ठी, राजा श्रेणिक के बारे में सोचना वैसे ही है जैसे कोई बौना, आम के वृक्ष से फल तोड़ने की बात सोचे.
राजकुमारी! यदि आपके मन में राजा श्रेणिक को पाने की इतनी अभिलाषा है, तो अवश्य ही उसका कोई मार्ग भी होगा. और वह मार्ग मैं बता सकता हूं.
क्या आपके पास कोई उपाय है? पर मगध तो बहुत दूर है. आपका कोई भी उपाय कैसे संभव हो सकता है?


मनुष्य इच्छा करे तो क्या नहीं हो सकता? मुझे तो ऐसी विद्या ज्ञात है कि मैं आपको तुरंत ही राजगृह नगर ले चल सकता हूँ. आप केवल अपनी सहमति दीजिए.


क्या इस तरह पिता की बिना आज्ञा के जाना उचित होगा? जब पिता को मालूम होगा तो क्या उत्तर दूंगी? क्यों चेलना?


जब हमें ज्ञात है कि पिताजी हमारी इच्छा कभी पूरी नहीं होने देंगे तो फिर उस बारे में सोचना कैसा? यदि हमें अपनी इच्छा पूरी करनी है तो हम वही करें जो हम चाहते हैं.

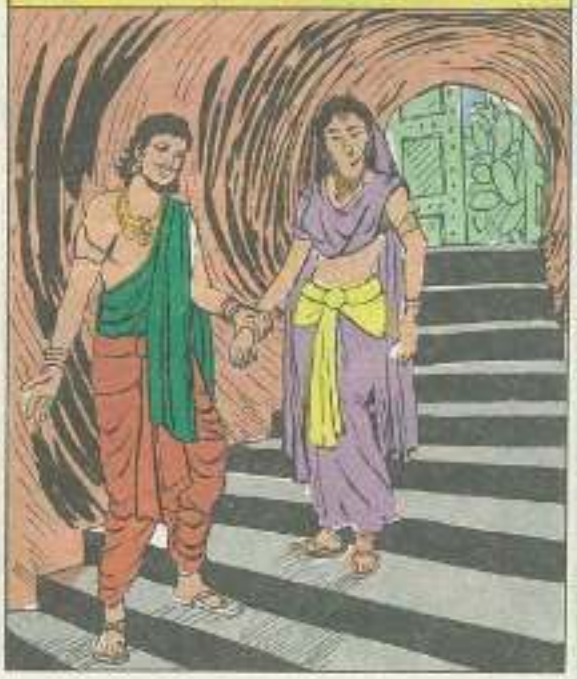

नहीं, यह उचित न होगा. पिताजी से पूछना अनिवार्य है. चेलना जाती है तो जाए! मैं किसी उपाय से यहाँ से वापस चलती हूँ.



सेठ के वेश में युवराज ने राजकुमारी ज्येष्ठा का बहाना समझ लिया.



इस बीच सुरंग बन कर तैयार हो चुकी थी. युवराज राजकुमारी चेलना को साथ लेकर सुरंग में घुसा.



और कुछ ही देर में वे सुरंग से बाहर आए तो वहाँ अत्यंत तेज घोड़ों वाला रथ तैयार खड़ा था.




उस रथ पर बैठकर युवराज राजकुमारी चेलना के साथ बड़ी तेजी से राजगृह की ओर बढ़ चला.
क्या मैंने यह उचित किया है? प्रेम के उन्माद में मैं अपना विवेक खो बैठी. शायद ज्येष्ठा ने ठीक किया. मुझे वापस जाना चाहिए.
हे श्रेष्ठी! मुझे अपने माता-पिता की याद सता रही है. आप मुझे वापस वैशाली ले चलें.
राजकुमारी जी, अब तो वापस लौटना किसी भी प्रकार संभव नहीं है. अब तक आपके पिताजी को पता लग गया होगा. वह हमें जान से मरवा देंगे.


अब तो आप धैर्यपूर्वक राजगृह चलें.


जब युवराज राजगृह पहुँचे तो स्वयं राजा श्रेणिक उनका स्वागत करने आए


और राजकुमारी चेलना को एक सुंदर पालकी में राजमहल की ओर धूमधाम से ले चले.


युवराज अभयकुमार की जय! राजा श्रेणिक बिंबसार की जय!


महल में स्वयं राजमाता महारानी इन्द्राणी ने चेलना का स्वागत किया.


इसके बाद विवाह मंडप में राजा श्रेणिक बिंबसार से चेलना का विवाह हुआ.


अब चेलना, मगध नरेश की पटरानी बन गयी थी और एक सुंदर महल में सुख से रहने लगी थीं.


किंतु उधर वैशाली के राजा चेटक क्रोध से उबल रहे थे.
सेनापति ! अपनी सारी सेनाएं लेकर जाओ और मगध को नष्ट कर दो.


सेनापति ने वैशाली की सेना लाकर गंगा के किनारे खड़ी कर दी.

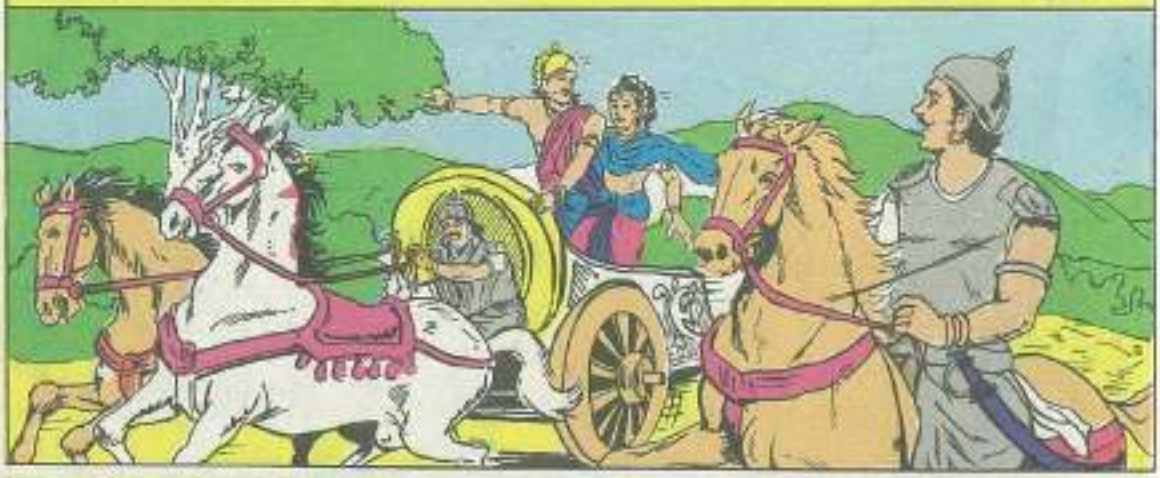

उधर राजा श्रेणिक बिंबसार के राज दरबार में.
महाराज ! गंगा के उस पार वैशाली की सेनाएं आकर खड़ी हैं. वे किसी क्षण गंगा पार करके मगध पर आक्रमण कर सकती हैं.
सेनापति! यह कोई अनहोनी नहीं है. हमें तो इसकी आशा थी. आप राजकुमार अभयकुमार को साथ लें और वैशाली की सेना का मुकाबला करें.


अगले ही क्षण मगध की सेनाएं युवराज अभय कुमार के साथ चल दीं.


महारानी जी ! सुना है, गंगा तट पर वैशाली की सेनाएं आकर खड़ी हैं. वे मगध पर आक्रमण करने वाली हैं. युवराज अभय कुमार सेना लेकर उनसे युद्ध करने जा रहे हैं.
मैं जानती हूं कि यह युद्ध क्यों होने वाला है. इसका कारण मैं हूं. किंतु मेरे कारण हजारों लोगों का रक्त बहे, यह तो उचित नहीं होगा. मुझे तत्काल कुछ करना होगा.


दासी! तुम तत्काल जाकर महाराज को सूचना दो कि मैं उनसे मिलना चाहती हूं.
महाराज श्रेणिक के पास चेलना
महाराज! आप जानते हैं कि वैशाली की सेना क्यों आई है? मैं नहीं चाहती कि मेरे कारण यह युद्ध हो. कृपया इसे रोकिए.
किंतु महारानी! युद्ध के लिए हमने नहीं, वैशाली की सेनाओं ने हमें ललकारा है. और उसका उत्तर देना तो हमारा कर्त्तव्य है.
किंतु हजारों लोग मारे जाएंगे - इस हिंसा का पाप तो मुझे ही भोगना पड़ेगा, क्योंकि इस युद्ध का कारण मैं ही तो हूँ.
तो क्या तुम इस युद्ध को रोक सकती हो?
यही करना होगा. मुझे युद्ध भूमि में जाना होगा. देखती हूँ मेरे होते हुए वैशाली की सेना कैसे युद्ध कर सकती है.
ठीक है! चलो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूं.

और महारानी चेलना तथा राजा श्रेणिक रथ पर बैठकर गंगा तट की ओर चल दिए.



मगध की सेना ने उन्हें देखा तो जय-जयकार करने लगी.



यह जयघोष सुनकर वैशाली की सेना चिंता में पड़ गयी.



तब वैशाली की सेना ने जयघोष किया.

महारानी चेलना की जय!
महाराज श्रेणिक की जय!

और इस तरह दोनों पक्षों की सेनाएं, प्रसन्न होकर लौट गयीं. यह रानी चेलना की महान विजय थी.

सुनो सुनायें सत्य कथाएँ

जैन चित्र कथा

नई पीढ़ी को अच्छी शिक्षा के लिए
हमारे नये अंक में

नया उत्साह, उमंग, ज्ञान रस से भरपूर, जीवन को प्रेरणा
देने वाली रोचक एवं मनोरंजक कहानियां

रंग बिरंगी दुनियाँ में
आपके नन्हें मुन्नों के लिए ज्ञान वर्धक टॉनिक
जैन चित्र कथा पढ़ें तथा पढ़ावें

अब तक प्रकाशित जैन चित्र कथाएँ।

(1) तीन दिन में
(2) धर्म की परीक्षा
(3) त्याग और प्रतिज्ञा
(4) घड़ों का सूर्य
(5) घर से घर
(6) अहिंसाघोष
(7) चमत्कार
(8) प्रथम दान
(9) सत्य घोष
(10) सात कोड़ियों में राज्य
(11) दीये वाले बाबा
(12) चंदना
(13) तारे एक साथ से चमकते रहें
(14) सिकन्दर और कल्याणमुनि
(15) चक्रित चक्रवर्ती
(16) धन से बड़ा मन
(17) साकुल
(18) स्वर्ग की सीढ़ियाँ

आगामी प्रकाशन

(1) जीवन
(2) मुनि रक्षा
(3) पाये का गौरव उत्तम से
(4) कथा रत्न है इसमें
(5) चरित्र ही मन्दिर है
(6) मुक्ति का राही
(7) आत्म वीरोंने
(8) महावीर के मामाजी
(9) आचार्य कुन्दकुन्द
(10) समाधि
(11) नन्हें मुन्नें
(12) एक चोर
(13) खेले की खाती
(14) नल कुबर
(15) वीरता गेंद
(16) चेटक पुत्र
(17) चन्द्रप्रभु जीवंधर
(18) कलाकार का अविस्मरण
(19) निर्वाण का जीवन दान
(20) महारानी मृगावती
(21) नेमीनाथ
(22) कलाम में धोखा मैत्र
(23) कलों को दक्षिणापुर
(24) सूत्रा का फूल
(25) मुनि का प्रवचन

प्रकाशक : आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

सोध सदन
अगरचंदजी हाउस सेवाश्रम रोड, जयपुर

प्राप्ति स्थान : जैन चित्र कथा कार्यालय

दि. जैन मन्दिर गुलाब वाटिका
दिल्ली सहारनपुर रोड दिल्ली (U.P.)

ये चित्र मेरे जिस पाठ की खुशी में छपाए गए चैक जैन चित्र कथा के नाम से भेजें

परम संरक्षक ११११ संरक्षक ५००१ आजीवन १५०१ वर्ष सदस्य ७०१

Not every Company gives you top-of-the-line in Law Books.

But then, not every company is Standard.

Walk in, Write or Call for prompt service for valuable books on

• IMPORT • EXPORT • FINANCE • CUSTOMS • EXCISE • INDUSTRIES • MANAGEMENT
• COMPANY LAW • GOVT. SERVICE • RBI • CSIR • ICAR • POLITICAL • COMMERCE
• LABOUR LAWS • TAXATION • ISI • LOK SABHA • ECONOMICS
• COMPETITIVE & OBJECTIVE-TYPE EXAMINATION • TRADE DIRECTORIES
• SURVEY OF INDIA MAPS ETC.

Also available : All types of Prescribed Forms & Registers

Chief Executives : Sant Lal Jain, Rajiv Kumar Jain & Sanjeev Kumar Jain

STANDARD BOOK COMPANY

Authorised Dealers : GOVT. OF INDIA PUBLICATIONS

Law Publishers • Distributors • Importers • Exporters

124–125, Municipal Market (Super Bazar Compound),
Connaught Place, Post Box No. 708,
New Delhi - 110 001 (India)

Phones : (O) 3313899, 3314447 (R) 3261827, 5772433/34/35 Fax : 0091-11-3712828

Regional Office : Bombay – **JAINA**, 649-A, Girgaum Road, Dhobi Talao, Bombay – 400 002
Phones : 2012143, 2018485 Fax : 0091-22-2003351